E-Pathshala

Practical Meaning of Jainism

Chapter - 2...A

वासक्षेप

वासक्षेप क्या है ?

जब तीर्थंकर भगवंत अपने शिष्यो को आशीर्वाद देते है तब इंद्र महाराज स्वर्ण थाल में दिव्य चूर्ण लेकर खड़े रहते है और परमात्मा अपने हाथों से गणधर भगवंत आदि के मस्तक पर दिव्य चूर्ण डालते हुए श्री चतुर्विध संघ की स्थापना करते है । वैसे ही श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदाय की परंपरा के अनुसार वर्तमान समय में सभी गुरु भगवंत अपने शिष्यो को आशीर्वाद देने के वक्त वासक्षेप डालते है और भवसागर पार उतरने का आशीर्वाद प्रदान करते है ।

सभी गुरु भगवंत आशीर्वाद देने के वक्त जिस वासक्षेप का उपयोग करते है उसको सूरीमंत्र, वर्धमानविद्या मंत्र और कुछ विशेष मंत्रों से अभीमंत्रित करके वासक्षेप डालते है ।

वासक्षेप डालने के वक्त पू. गुरुदेव आशीर्वचन के रूप में **''नित्थारपारगाहोह''** शब्द उच्चारण करते है अर्थात् आप भव संसारसागर से पार उतरो और मोक्ष को प्राप्त करो यही हमारा आशीर्वाद है । गुरु के आशीर्वाद से नया आत्मविश्वास, नई ऊर्जा, जागृत दशा, नई शक्ति, नई दिशा और कार्य सफलता हमें प्राप्त होती है ।

Courtesy by : SGR TEXTILE HOUSE LLP Vapi-Mumbai